M.A. Semester - II

III - Paper

Theoretical Perspectives on Development

By —: Ms. Bushra Fatima

Scanned with CamScanner

Culture & Development
संस्कृति और विकास

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मजूमदार ने तो संस्कृति को ही मनुष्य का जीवन माना है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति संस्कृति के माध्यम से करते हैं। संस्कृति में धर्म, कला, विज्ञान, विश्वास रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा मानव निर्मित सभी वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं। यही वस्तुएँ उसका सांस्कृतिक पर्यावरण कहलाती है। भौतिक पर्यावरण के विपरीत सांस्कृतिक पर्यावरण मानव निर्मित होता है। प्रत्येक समाज की अपनी सामूहिक जीवन प्रणाली होती है। उसकी कला, विश्वास, ज्ञान आदि विशेष ढंग के होते हैं जिसे हम सामान्य अर्थों में संस्कृति के अन्तर्गत रख सकते हैं। मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक साधनों का निर्माण किया है। इन साधनों को दो प्रमुख रूपों में बाँटा जा सकता है:

1- भौतिक संस्कृति 2- अभौतिक संस्कृति। दोनों का सम्बन्ध से ही है।

Scanned with CamScanner

भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति ? Essay.
एफ.
ऑगबर्न ने संस्कृति को दो भागों में बाँटा है :

1- भौतिक संस्कृति : भौतिक संस्कृति में मानव निर्मित उन सभी मूर्त वस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हे हम छू सकते हैं, देख सकते हैं और अपनी इन्द्रियों द्वारा महसूस कर सकते हैं। कुर्सी, भवन, पंखा, औजार, वस्त्र इत्यादि विभिन्न उपकरण व चीजें सब भौतिक संस्कृति का उदाहरण हैं। इन्हें मानव ने स्वयं निर्मित किया है। भौतिक संस्कृति मूर्त तथा संचयी होने के साथ-साथ उपयोगी भी होती है। इसमें शीघ्रता से परिवर्तन हो जाता है। भौतिक संस्कृति का सम्बन्ध मानव के बाह्य जीवन से है।

2- अभौतिक संस्कृति : अभौतिक संस्कृति में संस्कृति के अभौतिक पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। ये अमूर्त होते हैं इस नाते इसकी कोई निश्चित माप-तौल या रंग-रूप नहीं होता। इन्हें केवल महसूस किया

Rajdhani
PAGE
DATE / /

जा सकता है, इनका स्पर्श नहीं किया जा सकता। हमारे विश्वास, विचार, व्यवहार, करने के ढंग, प्रथा, रीति-रिवाज, कानून, मूल्य, मनोवृत्तियाँ, साहित्य, ज्ञान, कला, आदि अभौतिक संस्कृति के ही तत्व हैं। अभौतिक संस्कृति अपेक्षाकृत जटिल होती है। इसमें परिवर्तन बहुत कम अथवा धीमी गति से होता है। अभौतिक संस्कृति का सम्बन्ध मानव के आन्तरिक जीवन से है।

संस्कृति की विकास में भूमिका

एक ओर देखा जाए तो संस्कृति विकास में बाधक भी है तो दूसरी ओर कई बार यह विश्वास के मार्ग में ऐसी बाधाएँ खड़ी कर देती है कि विकास अवरुद्ध हो जाता है अर्थात संस्कृति विकास में बाधक भी है। आज अधिकांश विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि संस्कृति विकास का अनिवार्य पहलू है। विकास तब तक सम्भव नहीं जब तक कि स्थानीय परम्पराएँ एवं संस्थाएँ इसको अपना समर्थन प्रदान न करे इसलिए विश्व बैंक इस बात पर बल देता है कि किसी भी देश के आर्थिक विकास हेतु

वहाँ के नागरिकों, संस्कृतियों एवं समाजों, वहाँ के संगठनों एवं संस्थाओं को ध्यान में रखना अनिवार्य है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आज प्रथम दृष्टिकोण को अधिक समर्थन प्राप्त है। लैटिन अमेरिका Latin America में संस्कृति ने विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

विकास में साधक के रूप में संस्कृति

समाजशास्त्र में अनेक विद्वानों ने संस्कृति की विकास में भूमिका पर प्रकाश डाला है। Max Weber ने पूँजीवाद पर किये गए अपने अध्ययन में धर्म (जो संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है) को आर्थिक विकास में सहायक बताया है। 1980-1989 तथा 1990-1999 के दशकों में डगलस नार्थ जैसे इतिहासकारों ने आर्थिक जीवन एवं संस्थाओं को सुदृढ़ करने में संस्कृति के महत्व को स्वीकार किया है। उन्होंने Asia के देशों में हुए विकास में संस्कृति की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। सांस्कृतिक मूल्यों एवं कारकों का सामाजिक व्यवहार, उत्पादन की दर, उपभोग एवं कार्य के प्रति मनोवृत्तियों इत्यादि पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

Rajdhani
PAGE
DATE / /

Durkheim और Merton ने इसमें यह बताने का प्रयास किया है कि संस्कृति द्वारा निर्धारित लक्ष्य किस प्रकार से व्यक्ति के व्यवहार एवं मानसिकता को प्रभावित करती है। इस सन्दर्भ में दुर्खीम ने "सामाजिक अप्रतिमानता" की व्याख्या प्रस्तुत की। Merton ने उनकी विचारधारा को और आगे बढ़ाया है। इनके अनुसार सामाजिक संरचना अपने सदस्यों के सम्मुख व्यवहार के लिए सांस्कृतिक लक्ष्य ही प्रस्तुत नहीं करती वरन् उनकी प्राप्ति के लिए संस्थागत साधनों को भी निर्धारित कर देती है। यदि कोई व्यक्ति संस्कृति द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में संस्थागत उपायों को ही अपनाता है तो वह अनुपालन कर रहा होता है। अन्य परिस्थितियों में अप्रतिमानता की स्थिति होती है जो कि विचलित व्यवहार की ओर ले जाती है। Merton के विचारों को निम्नलिखित सारणी द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है -

सांस्कृतिक लक्ष्यों के साथ अनुकूलन के Merton द्वारा अभिव्यक्त प्रतिरूप

	अनुकूलन के ढंग	सांस्कृतिक लक्ष्य	संस्थागत साधन
1-	अनुपालन	+	+

2-	प्रवर्तन	+	−
3-	कर्मकाण्डीयता	−	+
4-	प्रत्यावर्तन	−	−
5-	विद्रोह	±	±

पूर्वोक्त सारणी में + का चिन्ह स्वीकृति का द्योतक है तथा − का चिन्ह अस्वीकृति का द्योतक है जबकि ± इस बात को बताता है कि इस अनुकूलन में सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत साधनों की स्वीकृति दी नहीं दी जाती, बल्कि उनके स्थान पर नए सांस्कृतिक लक्ष्यों और उनके अनुरूप संस्थागत साधनों को आरोपित करने का भी प्रयास किया जाता है।

अनुपालन की स्थिति में सांस्कृतिक लक्ष्यों एवं संस्थागत साधनों में साम्य पाया जाता है। यह स्थिति विकास में सहायक होती है। प्रवर्तन या नवाचार सांस्कृतिक लक्ष्यों को तो मानता है परन्तु संस्थागत साधनों में कोई नया तरीका अपनाता है जो समाज की वृहत मान्यताओं के अनुकूल नहीं होता है जैसे कोई विद्यार्थी अच्छे नं० प्राप्त करने के लिए नकल का तरीका अपनाए। कर्मकाण्डीयता या संस्कारवाद का उदाहरण वह शिक्षक है

जो कोर्स समाप्त करने के लिए जल्दी-जल्दी व्याख्यान देता है, बिना इस बात की चिन्ता किये कि छात्र समझ रहे हैं या नहीं, क्योंकि वह सांस्कृतिक साधनों का तो प्रयोग कर रहा है परन्तु लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं कर रहा है। प्रत्यावर्तनीय या पलायनवादी वे होते हैं जिन्हें लक्ष्यों व साधनों दोनों की उपादेयता में कोई विश्वास नहीं होता।

विकास के परिणामस्वरूप विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विकास के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक हस्तक्षेप तीव्र गति से प्रारम्भ होता है। इससे विभिन्न संस्कृतियों की दीवारें अक्सर टूटने लगती हैं। उदाहरणार्थ: एक रेस्तरां में मेज पर बिछा मध्य अमेरिका में बना कपड़ा, चीन में निर्मित कप, इथोपिया में पैदा हुई कॉफी तथा भारत में निर्मित चीनी इस सांस्कृतिक हस्तक्षेप की द्योतक है।

सांस्कृतिक विविधताओं ने विकास के अध्ययनों में सांस्कृतिक आयाम को महत्वपूर्ण बना दिया है। पहले राष्ट्र को विकास की इकाई माना जाता था परन्तु अब "राष्ट्र" के संप्रत्यय में परिवर्तन हुआ है। तथा विकास

अध्ययनों में सामुदायिक विकास स्थानीय आर्थिक विकास तथा स्वदेश प्रादेशिक विकास जैसे संप्रत्ययों का महत्व बढ़ गया है। स्थानीय विकास हेतु भी विविध रूप सामने आये हैं जैसे नगरीय विकास, ग्रामीण विकास क्षेत्रीय विकास, नृजातीय विकास इत्यादि।

अब विकास हेतु किया जाने वाला नियोजन संस्कृति पर आधारित है क्योंकि संस्कृति की परिधि से बाहर विकास का काम करना सम्भव नहीं है। विकास में संस्कृति को आर्थिक विकास की दृष्टि से स्पष्ट किया जाता है तथा इसमें रचनात्मक व सामाजिक विकास का महत्व अपेक्षाकृत कम है। नृजातीय विकास का उपागम देसी संस्कृति के विकास को प्राथमिकता प्रदान करता है। इस आगम में विभिन्न राष्ट्रों के समुदायों में सांस्कृतिक विविधताओं को बनाये रखते हुये देसी संस्कृति के विकास हेतु प्रयास किया जाता है।

संस्कृति पर आधारित विकास यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं विश्वव्यापी वृहद् आर्थिक नीतियों वाले विकास की प्रवृत्ति को अनदेखा नहीं करता है तथापि विकास हेतु क्षेत्रीय स्तर ही सुपरिचित इकाई बन चुकी है।

अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा विकास में संस्कृति को महत्व देने की नवीन बात कही गई है।

वैश्वीकरण के इस आधुनिक युग में विकास में संस्कृति के बाध्यक तत्व महत्वहीन होने लगे हैं। इसका प्रमुख कारण संस्कृति का वैश्वीकरण है। इसीलिए यह कहा जाता है कि आज पूरा विश्व एक गाँव में बदल गया है। विकासशील देशों में सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में परम्परा एवं आधुनिकता में पाया जाने वाला सह-अस्तित्व भी विकास का ही एक परिणाम है। विकास से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान भी हो सकता है। इसी के चलते यूरोपीय देशों ने अपनी संस्कृति की विविधताओं की रक्षा हेतु अमेरिकी संस्कृति के खतरे के विरुद्ध अभियान चलाया।

विकास में बाध्यक के रूप में संस्कृति

विकास एवं Technology के प्रचार-प्रसार में संस्कृति बाधा भी हो सकती है। विशिष्टजनवादी संस्कृति में नौकरशाही एवं कुलीनतंत्र वर्तमान व्यवस्था में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं

द्वितीय, जब नवीन प्रौद्योगिकी अपेक्षाकृत उच्च संस्कृति के समुदायों पर लादने का प्रयास किया जाता है तो कई बार सांस्कृतिक संघर्ष की स्थिति विकसित हो जाती है जिससे विकास अवरुद्ध होने लगता है।

यद्यपि रूढ़िवादिता, धर्म पर आधारित विश्व दृष्टिकोण, भाग्यवादिता इत्यादि सांस्कृतिक लक्षण विकास में बाधक माने जाते हैं तथापि आज अधिकांश विद्वान संस्कृति को विकास के साधक के रूप में ही स्वीकार करने लगे हैं।

Scanned with CamScanner